भजन

तर्ज–जाना था हमसे दूर

सुख अरश अजीम के अपने कहां गये
जो रात दिन पिया जी तुमने हमे दिये

1–ऐसी नजर फिराई कि सब कुछ भुला दिया
नजरो ही तो इश्क के सागर सदा पिये

2–अंग हम सुभान के और आपके है तन
निज आनन्द में हमें अब तो उठाइये

3–सुंदरता स्वरूप की सिनगार नूर का
उनको देखे बिन तो जमाने गुजर गये

4–प्रीतम मेरे प्राण के मीठे मेरे महबूब
मीठी रसना के वचन मीठे सुनाइये